“क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन” 2019

दिनांक : 20, 21 एवं 22 सितम्बर 2019
(त्रि-दिवसीय सम्मेलन)

उद्घाटन : 11 बजे, दिनांक : 20.09.2019

संस्कृत विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर
द्वारा आयोजित
आर्थिक सहयोग : महर्षि-सान्दीपनि-राष्ट्रिय-वेद-विद्या-प्रतिष्ठान, उज्जैन
एवं
प्राच्यविद्या संस्कृत प्रतिष्ठान, असम

आयोजन-स्थल : सभागार- 02, भूतल, अकादमिक भवन- 11,
त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर

प्रधान संरक्षक
प्रो. विजयकुमार लक्ष्मीकान्त राव धारूरकर,
माननीय कुलपति
त्रिपुरा विश्वविद्यालय

सलाहकार समिति
कुलसचिव, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
प्रो. चन्द्रिका बसु मजुमदार,
संकाय प्रमुख, कला एवं वानिज्य
त्रिपुरा विश्वविद्यालय
प्रो. सत्यदेव पोद्दार,
परीक्षा नियन्त्रक
त्रिपुरा विश्वविद्यालय
डा. अलक भट्टाचार्य,
सी. डी. सी
त्रिपुरा विश्वविद्यालय
प्रो. एम.के. सिंह,
रसायन विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
संयोजक
डा. शंकर नाथ तिवारी,

सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग
त्रिपुरा विश्वविद्यालय

सम्मेलन का उद्देश्य-

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" (मनु. २/६)। सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति, साधना एवं धर्म का मूल वेद हैं। हमारी भारतीय परम्परा वेदों को धर्म, ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में परम प्रमाण मानती है। इसी में ऋषियों का प्रज्ञान प्रतिफलित है। विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद भाव एवं भाषा को लेकर आज भी चर्चा का विषय बना हुआ है। प्रज्ञान के इस प्रकाश को किसी ने कृषक गीत कहा तो किसी ने अशिक्षित मानव का असम्बद्ध प्रलाप । किसी ने इसे प्रकृति के नाना ताण्डव से भीत सन्त्रस्त असहाय मानव का आर्तनाद बताया। परन्तु ऐसी बात नहीं है। आधुनिक पाश्चात्य विज्ञान ने बहिर्मुख पर्यवेक्षण, परीक्षण, निरीक्षण के आधार पर जिन सब तत्त्वों का आविष्कार किया है वे सभी विषय ऋषियों की वेद वाणी में दृष्टिगोचर होते हैं। 'ऋषि' शब्द की व्युत्पत्ति ऋष् गतौ (१२८७) धातु से निष्पन्न होता है। यहाँ 'गति' का अर्थ विशिष्ट गमन अर्थ में हैं। "ऋषति प्राप्नोति सर्वान् मन्त्रान्, ज्ञानेन पश्यति संसारपारं वा ।" आधुनिक विद्वान् वेद को प्राचीन मानव संस्कृति, विशेषतया मूलभूत आर्य संस्कृति के ज्ञान के लिए आकर ग्रन्थ मानते हैं। "सर्वज्ञान मयो हि सः" की अवधारणा को समाहित करने वाला सर्वविदित वेद क्या कारण हुआ कि अध्ययन अध्यापन से उपक्षित होता चला गया । समझने की आवश्यकता है कि "सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा" का चिंतन करने वाले हमारे ग्रन्थ कैसे विलुप्त होते चले गये? जिन वेदों से हमारे राष्ट्रिय जीवन के दिव्य मानवीय आदर्शों की रक्षा होती रही, जिससे आध्यात्मिक आधिदैविक एवं आधिभौतिक रूप में सर्वाङ्गीण विकास हुआ वे वेद अवहेलना के विषय कैसे बन गये? विश्व को बन्धुत्व, परोपकार, ज्ञान-विज्ञान प्रभृति विषयों का ज्ञान कराने वाले वेदों को पठन-पाठन का महत्वपूर्ण भाग क्यों नहीं बनाया गया? "सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्" जैसे समदर्शी भावनाओं से ओतप्रोत शास्त्र कालान्तार में उपेक्षा के विषय कैसे हो गए? सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार के शाश्वत सिद्धान्तों से परिपूर्ण शास्त्र समाज में अपनी उपयोगिता कैसे खो दिए?- प्रभृति विषयों को ध्यान में रख कर इस त्रि-दिवसीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन का एक प्रमुख उद्देश्य है लुप्त हो रहे वेद मंत्रों की स्वर-प्रक्रिया को समाज के समक्ष उपस्थापित करना। चारों वेदों की प्राप्त शाखाओं के विविध पाठों को श्रोताओं के समक्ष सस्वर पाठ के माध्यम से वेदों की उच्चारण-प्रक्रिया को समझना और समझाना इस सम्मेलन का प्रधान उद्देश्य है। उत्कृष्ट एवं आधिकारिक विद्वान् देश के कोने-कोने से पधार कर मंत्र पाठ के माध्यम से वेदों के प्रति विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं पाठशालाओं के अध्यापकों एवं छात्रों के समक्ष वेद पाठ के प्रति जिज्ञासा एवं उत्कण्ठा पैदा करेगें। जिससे दिव्य ज्ञान की परंपरा विकसित होगी। महर्षि सान्दीपनि-राष्ट्रिय-वेद-विद्या-प्रतिष्ठान- उज्जैन, जो भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के साथ मिल कर वेद विज्ञान के विशिष्ट ज्ञान को देश विदेश के कोने-कोने में प्रचारित प्रसारित कर रहा है। इस का उद्देश्य वेदों को संरक्षण और सम्बर्धन करना है। सम्पूर्ण भारत में इस संस्था के लगभग ५०० केंद्र हैं जो वेदों की विभिन्न पाठ प्रणालीओं को जीवित रखे हुए हैं। इस प्रतिष्ठान का स्पष्ट उद्देश्य है कि सामाजिक प्रतिष्ठानों के सहयोग एवं अकादमिक संस्थानों की मदद से देश के विविध भागों में वेदों की शिक्षा दी जाए। प्रतिष्ठान विशिष्ट विद्वानों के माध्यम से यत्र तत्र सम्मेलन आयोजन कर विलुप्त हो रही पाठ-प्रक्रियाओं को समाज के समक्ष रख कर वेद के प्रति अभिरुचि एवं जागरूकता पैदा करता है तथा विलुप्त हो रहे ज्ञान राशि की रक्षा करता है। इस प्रकार प्रतिष्ठान का उद्देश्य वेद निहित ज्ञान को जन जन तक पहुँचाना है। त्रिपुरा विश्वविद्यालय का संस्कृत विभाग प्रारम्भ से ही वेद ज्ञान को ले कर जागरूक रहा है। इस विषय पर अनेकानेक

शोध प्रबन्ध जमा कराये गए हैं तथा विविध शोध पत्रों के माध्यम से वैदिक गूढ विषयों को समाज के समक्ष प्रस्तुत भी किया गया है। यह वैदिक सम्मेलन उक्त परम्परा का ही अगला पड़ाव है।

संस्कृत विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला; प्राच्य विद्या संस्कृत प्रतिष्ठान, असम; जैन अध्ययन केंद्र त्रिपुरा विश्वविद्यालय, महर्षि सान्दीपनि-राष्ट्रिय-वेद-विद्या-प्रतिष्ठान, उज्जैन सम्मिलित रूप से भारतीय ज्ञाननिधि को जन जन तक ले जाने का प्रयास करेगा, यही इस सम्मेलन का उद्देश्य होगा।

शोधपत्र के उपविषय :

1. वैदिक उच्चारण प्रक्रिया, समस्या एवं समाधान ।
2. मंत्र संहिताएँ और उनके विभाजन की प्रक्रिया ।
3. वैदिक संस्कृति और उसका स्वरूप ।
4. वेदों में राष्ट्रिय भावना ।
5. आचार और संस्कार ।
6. न्याय और शासन ।
7. वेदों की वैज्ञानिक अवधारणा ।
8. उत्तर आधुनिकता तथा वेद ।
9. जैन धर्म पर वैदिक प्रभाव ।
10. जैन धर्म की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएँ ।
11. भारतीय संस्कृति को जैन धर्म की देन ।

आयोजन समिति

अध्यक्ष : डा. सिप्रा राय (विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय)
एवं श्री विनय कुमार शर्मा
उपाध्यक्ष : डा. देवराज पाणिग्राही, सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
संयोजक : डा. शंकर नाथ तिवारी, सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
सचिव : श्री पार्थ सारथी शील, सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
एवं
श्रीमति जय साहा, सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
एवं
डा. सिन्धु पोड्याल, सहायक प्राध्यापक,

दर्शन विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

कोषाध्यक्ष : श्री बिवेक कुमार मिश्र

स्वागत उपसमिति

प्रो. चन्द्रिका बसु मजुमदार

प्रो. सत्यदेव पोद्दार

प्रो. सुकान्त बनिक

डा. देवर्षि मुखर्जी

डा. विपिन कुमार शर्मा

डा. राजीव दुबे

डा. काली चरण झा

डा. शिव शंकर सिंह

डा. थीरू सेलवन

एवं

विभाग के समस्त सदस्य

पंजीकरण उपसमिति

डा. सिन्धु पोड्याल

सुश्री चुमकी साहा

सुश्री वीणापाणि दास

आवास उपसमिति

डा. बृज मोहन पाण्डेय

डा. देवराज पाणिग्राही

भोजन उपसमिति

डा. भृगु नाथ पाण्डेय

प्राणेश दास

नयन मजुमदार

प्रयास विश्वास

यातायात उपसमिति

श्री बिवेक कुमार मिश्र

डा. शंकर नाथ तिवारी

डा. बि.एन. पाण्डेय

विक्रम त्रिपुरा

अभिजित पाल

समरजित दास

देवजित दत्ता

सांस्कृतिक कार्यक्रम उपसमिति

डा. उत्पल बिश्वास

डा. अजय कुमार

श्री पार्थ सारथी शील

वित्त उपसमिति

श्री बिवेक कुमार मिश्र

डा. शंकर नाथ तिवारी

आवश्यक सूचनाएँ : शोध पत्र प्राप्त होने की अन्तिम तिथि 15. 09. 2019 । पंजीकरण निःशुल्क ।

सम्पर्क सूत्र :

डा. शंकर नाथ तिवारी - 8787345469 / 9862754522
Tiwaryshankar29@gmail.com
chumkisaha386@gmail.com
श्री पार्थ सारथी शील - 9013742031
parthasarathisil@tripurauniv.in